भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-2/अंक -17/ नवम्बर-2022

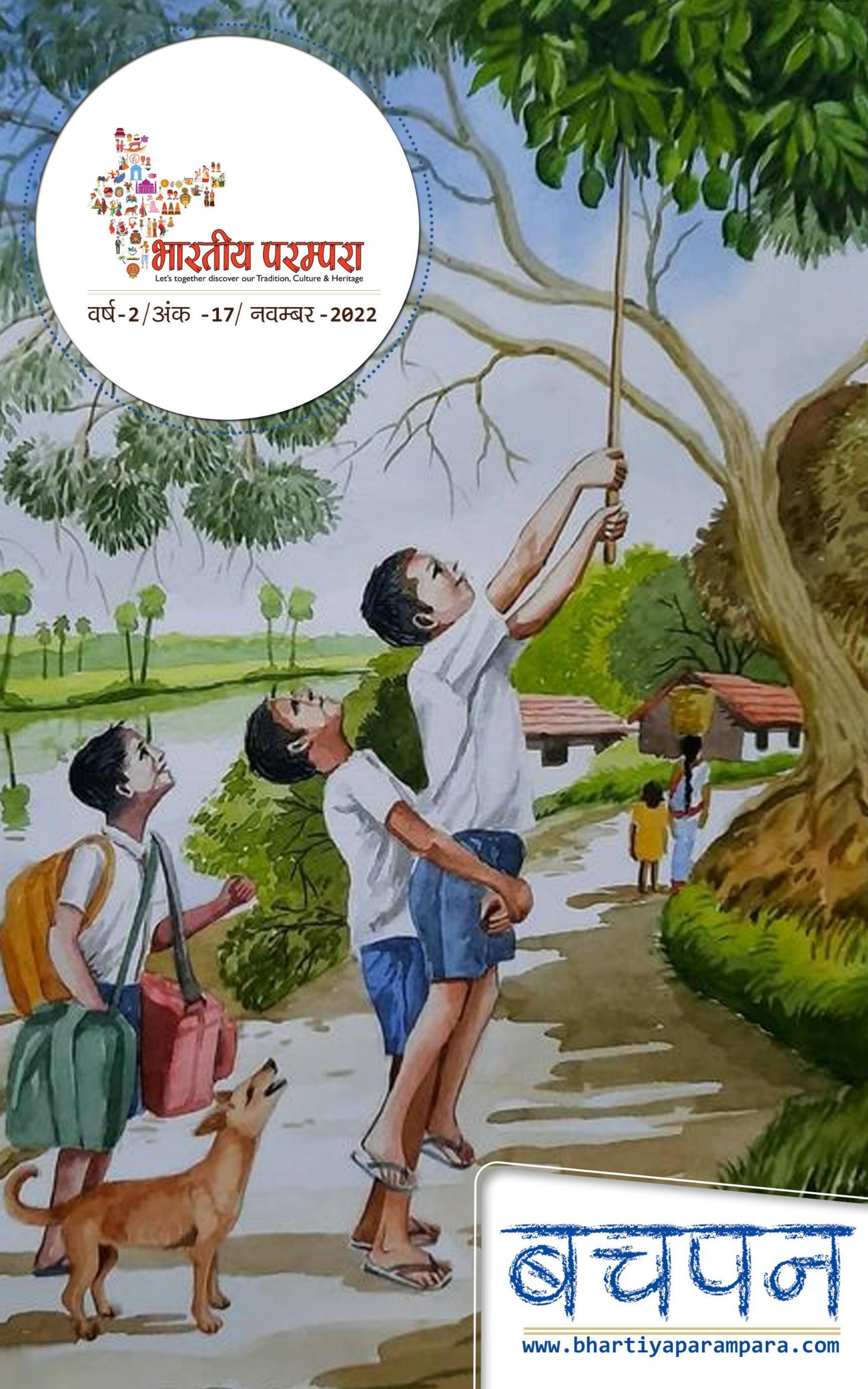

बचपन

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-2/अंक -17/ नवम्बर -2022

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

For Private Circulation Only

नवम्बर माह

साका कैलेण्डर - 1944 विक्रम संवत - 2079 अयान - दक्षिणायन ऋतु - हेमन्त

सोम		07 कार्तिक शु. चतुर्दशी, देव दीवाली	14 कार्तिक कृ. षष्ठी, बाल दिवस	21 कार्तिक कृ. द्वादशी, प्रदोष व्रत	28 अश्विन शु. पंचमी, राम-सीता विवाह, श्री पंचमी
मंगल	01 कार्तिक शु. अष्टमी, गोपाष्टमी	08 कार्तिक शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, चंद्र ग्रहण पूर्ण	15 कार्तिक कृ. सप्तमी	22 कार्तिक कृ. त्रयोदशी	29 मार्ग. शु. षष्ठी, स्कंध षष्ठी
बुध	02 कार्तिक शु. नवमी, अक्षय नवमी, सतयुग	09 कार्तिक कृ. प्रतिपदा, मासिक कार्तिगाई	16 कार्तिक कृ. सप्तमी	23 कार्तिक कृ. चतुर्दशी, मासिक शिवरात्री, अमावस्या	30 मार्ग. शु. सप्तमी
गुरू	03 कार्तिक शु. दशमी, कंस वध	10 कार्तिक कृ. द्वितीया	17 कार्तिक कृ. अष्टमी, कालाष्टमी	24 मार्ग. शु. प्रतिपदा	
शुक्र	04 कार्तिक शु. एकादशी, देवुत्थान एकादशी व्रत	11 कार्तिक कृ. तृतीया	18 कार्तिक कृ. नवमी	25 मार्ग. शु. द्वितीया	
शनि	05 कार्तिक शु. द्वादशी, तुलसी विवाह, प्रदोष व्रत	12 कार्तिक कृ. चतुर्थी, गणाधिप संकष्टी चतुर्थी	19 कार्तिक कृ. दशमी	26 मार्ग. शु. तृतीया	
रवि	06 कार्तिक शु. त्रयोदशी	13 कार्तिक कृ. पंचमी	20 कार्तिक कृ. एकादशी, उत्पन्ना एकादशी व्रत	27 मार्ग. शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी	

मार्ग. - मार्गशिर्ष कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

अक्षय नवमी

'प्रकृति पूजन का ध्येय समेटे अक्षय नवमी'

कार्तिक का माह आते ही अनायास मन में नया उत्साह संचारित होने लगता है, उत्सवों का जो क्रम प्रारम्भ होता है वो सतत चलता रहता है और जन जीवन में नवीन ऊर्जा का प्रसारण करता है।

इसी क्रम में दीपावली के नौ दिनों के पश्चात अक्षय नवमी के पर्व मनाया जाता है। अक्षय नवमी जिसे **"आंवला नवमी"** भी कहा जाता है, कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को यह त्योहार मनाने की परंपरा है। इस दिन से ही **"सतयुग"** का प्रारंभ माना गया है।

यह त्योहार अधिकतर उत्तर-भारत में ही मनाते हैं। प्रकृति और वृक्षों को समर्पित इस पर्व के दिन महिलाएँ आँवले के वृक्ष का पूजन-अर्चन करती हैं। सुबह सबेरे तैयार होकर महिलाएँ आँवले के वृक्ष के नीचे जाकर उसे यथायोग्य श्रृंगार की वस्तुएँ, भोग, प्रसाद आदि चढ़ाती हैं एवं वृक्ष की 108 परिक्रमा करते हुए उसके समान ही जीवन के फलने-फूलने व समृद्धि की कामना करती हैं। वृक्ष की छाया में ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है, तत्पश्चात स्वयं प्रसाद स्वरूप भोजन ग्रहण करती हैं। अपने संतानों का रोली टीका करते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना करती हैं।

कहते हैं आंवले का फल पौष्टिकता की खान है। आंवले का वृक्ष कार्तिक मास में फलता है। वृक्षों की शाखाओं में जब गुच्छों में हरे-हरे फल लगते हैं तो हृदय अनायास ही प्रफुल्लित हो जाता है।

आँवला सर्वोत्कृष्ट औषधि मानी गयी हैं। चरक के अनुसार शारीरिक अवनति को रोकने वाले अवस्था स्थापक द्रव्यों में आंवला सबसे प्रधान है।

कहते हैं समुद्र मंथन से उत्पन्न अमृत की छलकी बूंदों से इस वृक्ष का आविर्भाव हुआ अतः इसे "अमृतफल" भी कहा जाता हैं। प्राचीन ग्रंथों में इसे माता के समान कल्याण करने वाला और अवस्था को बनाए रखने वाला कहा गया है। यह वृक्ष देवताओं को भी प्रिय है तथा ये वृक्ष हमारे भारत में ही जन्मा है, ऐसा माना जाता है। इस वृक्ष का प्रत्येक भाग औषधीय गुणों से भरपूर है। अतः ये वृक्ष पूजनीय है।

- गीता गुप्ता जी, उन्नाव (उत्तर प्रदेश)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

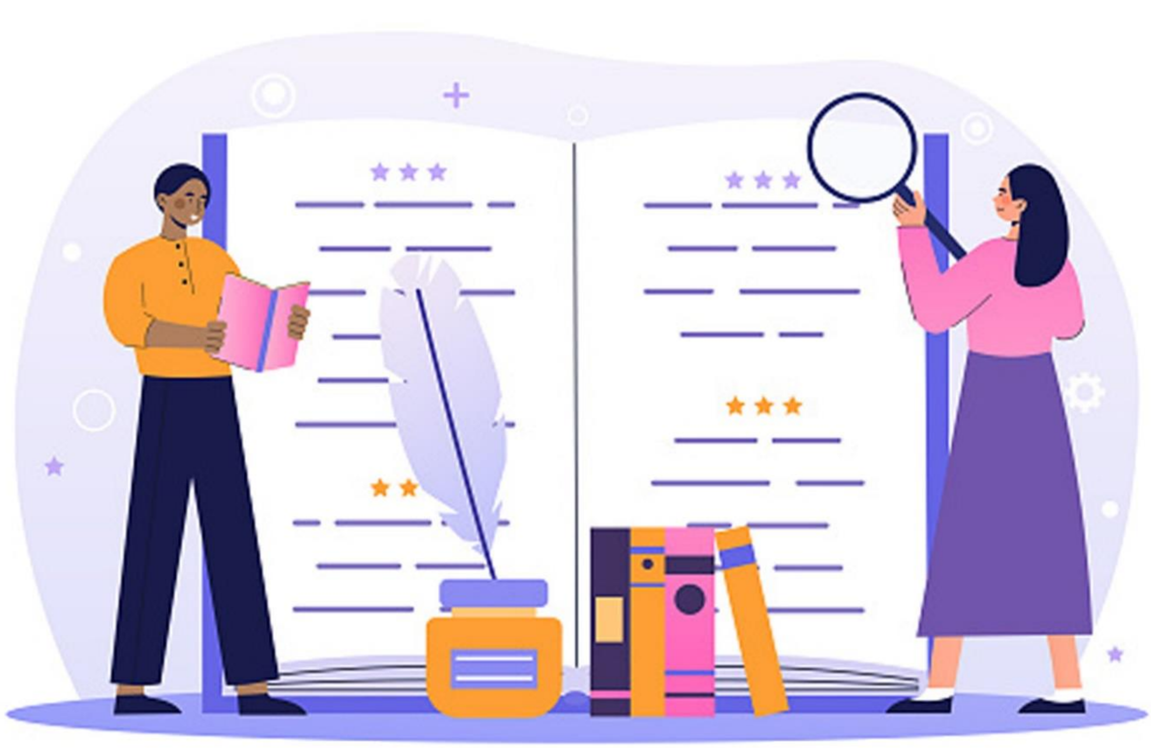

देव उत्थान एकादशी

देवोत्थान एकादशी के बारे में चर्चा करने से पहले मैं बताना चाहती हूँ, एकादशी का महत्व क्या है और एकादशी का व्रत क्या होता है?

हमारी भारतीय संस्कृति में एकादशी या ग्यारस एक महत्वपूर्ण तिथि है। इस व्रत की हमारे हिंदू धर्म में बड़ी महत्ता है। यही कारण है हिंदू धर्मावलंबी बड़ी श्रद्धा और निष्ठा के साथ एकादशी का व्रत करते हैं।

एकादशी व्रत क्या है -
"एक ही दशा में रहते हुए अपने आराध्य देव का पूजन एवं वंदन करने की प्रेरणा देने वाला व्रत एकादशी व्रत कहलाता है।"

पद्म पुराण में भी एकादशी महा पुण्य प्रदान करने वाली उल्लेखित है, कहा जाता है जो व्यक्ति इस व्रत को करता है उसके पितृ तथा पूर्वज बुरी योनि को त्याग स्वर्ग लोक चले जाते हैं।

संक्षेप में हम कह सकते हैं हिंदू पंचांग की 11वीं तिथि को एकादशी कहते हैं। एकादशी संस्कृत भाषा से लिया शब्द है। यह माह में 2 बार आती है, पूर्णिमा के बाद तथा अमावस्या के बाद। इस तरह से एकादशी साल में 24 होती हैं लेकिन अधिक मास को मिलाकर इनकी संख्या 26 हो जाती है।

महत्व -
पुराणों के अनुसार एकादशी को **"हरी दिन और हरी बासर"** भी कहते हैं। यह व्रत वैष्णव तथा गैर वैष्णव दोनों ही करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि एकादशी के दिन व्रत, हवन, यज्ञ, वैदिक कर्मकांड आदि करने से अन्य दिनों की तुलना से अधिक फलदायी है इसका वर्णन स्कंद पुराण में भी किया गया है।

नियम -
एकादशी व्रत करने के नियम बहुत सख्त होते हैं। व्रत करने वाले को एकादशी तिथि से पहले (दशमी तिथि के सूर्यास्त) सूर्यास्त से लेकर एकादशी के अगले सूर्योदय (द्वादशी तिथि के सूर्योदय) तक उपवास करना पड़ता है।

एकादशी के दिन सुबह दातून का इस्तेमाल ना करें इसके स्थान पर नींबू, जामुन या आम के पत्ते चबाकर उंगली से दाँत साफ करें। इस दिन पत्ते तोड़ना भी वर्जित है तो नीचे टूटकर गिरे पत्ते प्रयोग में लाए या एक दिन पहले तोड़ के रखें।

स्नानादि के पश्चात मंदिर जाकर गीता का पाठ करें तथा **"ॐ भगवते वासुदेवाय"** मंत्र का जाप करें तथा यथाशक्ति दान करें।

दूसरे दिन अर्थात द्वादशी के दिन आम दिनों की तरह कार्य करें, सुबह उठकर भगवान विष्णु की पूजा करें तथा उसके पश्चात सामान्य भोजन लेकर व्रत समाप्त करें। त्रयोदशी लगने से पहले ही व्रत का पारण कर ले।

भोजन -
एकादशी के दिन व्रती निराहार भी रह सकते है और ताजे फल, कूटू/सिंघाड़े का आटा, नारियल, जैतून, दूध, अदरक, काली मिर्च, सेंधा नमक, आलू, साबूदाना और शक़्करकंद का प्रयोग कर सकते हैं।

एकादशी को वर्जित कार्य -
- वृक्ष के पत्ते ना तोड़े
- बाल नहीं कटवाए
- झूठ न बोले
- कम बोले यदि संभव हो तो मौन करें
- चावल का सेवन वर्जित है
- फलाहार में गोभी शलजम पालक का सेवन ना करें
- ब्रह्मचर्य का पालन करें

देवोत्थान एकादशी को "देव प्रबोधिनी, हरि प्रबोधिनी" एकादशी के नामों से भी जाना जाता है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में 11वा चंद्र दिवस एकादशी कहलाता है। यह एकादशी चतुर्मास के अंत का प्रतीक है। यह चार मास विष्णु भगवान के शयन के मास माने जाते हैं। ये 4 माह जब विष्णु भगवान का शयन होता है उन महीनों में कोई शुभ कार्य नहीं किया जाता है, इस दिन से मांगलिक कार्य प्रारंभ होते हैं। विवाह धार्मिक अनुष्ठान प्रारंभ हो जाते हैं, तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ आज के दिन अर्थात देवोत्थान एकादशी दिन ही होता है अतः इसे तुलसी विवाह की एकादशी भी कहा जाता है। इस एकादशी के बाद ही शादी के मुहूर्त प्रारंभ हो जाते हैं।

आदि पुराण में इस एकादशी के बारे में कहा गया है कि यह बुद्धि तथा शांति प्रदाता, संतान दायक एकादशी है। इस दिन घर घर में सोते हुए देवों को उठाया जाता है तथा पूजा की जाती है, एकादशी का व्रत बहुत अधिक फलदायक होता है। यदि संभव हो तो उस दिन गंगा स्नान भी करना चाहिए।

इस दिन भगवान विष्णु की पूजा तुलसी की मंजरी से की जाती है, गीता का पाठ किया जाता है ऐसा करने से पापों का शमन होता है।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

Google Location QR Code:
LUXURIOUS HOMES
1& 2 BHK With Jodi Flat
WHITE BERRY RESIDENCY
WHITE BERRY RESIDENCY
POSSESSION
DEC 2022
LAST CHANCE TO AVAIL
FESTIVAL OFFER
Straight Discount on
BOOKING
All Inclusive
1 BHK RS. 1.5 LACS
2 BHK RS. 3 LACS
Avail offer upto 30th Sept 2022
www.whiteberryresidency.com
98705 80810, 85913 69996
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.

GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
www.kingswedsqueens.com
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

तुलसी विवाह

हिंदू धर्म में तुलसी के पौधे का बहुत अधिक महत्व है। किसी भी प्रकार का शुभ कार्य, पूजा, यज्ञ, हवन, शादी, गृह प्रवेश और मुंडन जैसे सारे शुभ कार्य तुलसी के बिना अधूरे माने जाते है।

इसके अलावा तुलसी को लेकर कुछ मान्यताएं भी हैं, जैसे भगवान गणेश को कभी भी तुलसी नहीं चढ़ाई जाती है।

तुलसी कौन थी और कैसे पौधे के रूप में पूजनीय है?

तुलसी गौ लोक (भगवान श्री कृष्ण का लोक) में 1 गोपी का नाम है, जो भगवान कृष्ण की सच्चे मन से पूजा अर्चना करती थी।

भगवान कृष्ण के मित्र सुदामा भी गौ लोक में ही रहते है, जो तुलसी से विवाह करना चाहते है पर तुलसी के रोम रोम में तो सिर्फ भगवान ही बसे है। एक बार भगवान की लीला से अभिभूत होकर सुदामा तुलसी की प्रशंसा कर रहे थे और तुलसी को भी सुनने में अच्छा लग रहा था तभी राधा-रानी ने दोनों से पूछा कि प्रभु कहाँ है? पर दोनों आपने वार्तालाप में ही लीन थे तो उनको कुछ सुनाई नहीं दिया इससे राधा जी को क्रोध आ गया और दोनों को श्राप दिया कि सुदामा ने असुर जैसा बर्ताव किया है तो उसको असुर कुल में जन्म लेना होगा और तुलसी को भी धरती पर जन्म लेना होगा। दोनों को एक दूसरे से बिछुड़ने का अत्यंत दुःख था पर यह सब **तो प्रभु की लीला ही है, जो श्राप को भी वरदान बदल देती है। इसी लीला में भगवान गणेश का भी महत्वपूर्ण भाग है।**

श्राप के कारण सुदामा ने असुर कुल में जन्म लिया और उनका नाम शंखचूड़ हुआ और तुलसी का जन्म एक राजा के यहाँ हुआ जिसमे उनका नाम तुलसी ही था। दोनों के परिवार वाले भगवान विष्णु के परम भक्त थे और उनकी ही कृपा से उनके यहां संतान की उत्पत्ति हुई थी। तुलसी स्वभाव से अत्यंत चंचल थी और बचपन से ही भगवान नारायण की पत्नी बनने के लिए उत्सुक थी, और उनकी आराधना किया करती थी।

उधर शंखचूड़ बचपन से अत्यधिक बलवान हुए और आसुरी शक्ति को और अधिक ताकतवर बनाने के लिए उनके पिताजी ने ब्रह्मा जी की तपस्या करने को कहा, शंखचूड़ युवावस्था में पुष्कर राज तीर्थ के लिए रवाना हुए और घोर तपस्या करनी शुरू कर दी।

तुलसी भी युवावस्था में आयी तब उनके पिताजी ने उनको अपने मन को स्थिर करने और नारायण की तपस्या के लिए गंगा घाट भेज दिया। तुलसी ने गंगा किनारे अपनी तपस्या शुरू करी।

तुलसी का चंचल मन बहुत भटक रहा था उनको हर जगह भगवान कृष्ण ही दिखाई दे रहे थे। वही गंगा के घाट पर भगवान गणेश भी तपस्या में लीन थे। तुलसी के चंचल मनोस्तिथि के कारण उसे भगवान गणेश में भी प्रभु कृष्ण ही नजर आने लगे और अपनी तपस्या को पूरा होता देख वह गणेश जी के पास जाकर कृष्ण की वंदना करते हुए विवाह का प्रस्ताव दिया। इससे गणेश जी की तपस्या भंग हो गयी और उन्हें अत्यंत क्रोध आया और बोले की मैं बालक हूँ और आजीवन ब्रह्मचारी व्रत का पालन करना चाहता हूँ और उन्होंने तुलसी को विवाह के लिए मना कर दिया।

जिससे तुलसी को भी क्रोध आया और उसने भगवान गणेश को श्राप दिया की- **"आप अपने व्रत का पालन नहीं कर सकते है और १ नहीं आपको २ शादियाँ करनी पड़ेगी"** इस श्राप से गणेश जी को और अधिक क्रोध आया क्योंकि एक तो उनकी तपस्या अधूरी रह गयी और ऊपर से श्राप मिल गया तो उन्होंने भी तुलसी को श्राप दिया की इस जन्म में तुमको एक असुर से शादी करनी पड़ेगी जिससे इस जन्म में वो अपना व्रत (भगवान श्री कृष्ण को पति के रूप में पाना) पूरा नहीं कर पायेगी और मेरी तपस्या अधूरी रह गयी है तो तुम एक पौधे में बदल जाएगी और उसका पत्ता कभी भी मेरी पूजा में नहीं डाला जायेगा। तब तक तुलसी के आँखों पर पड़ा पर्दा हट गया था और उसे अपनी गलती का आभास हो गया। उसने गणेशजी से माफी मांगी और विनती करी कि उसे श्राप मुक्त कर दे।

उसके साथ ही गणेश मंत्र - **"ॐ गं गणपतये वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा"** से उनकी पूजा करी। तब भगवान गणेश का क्रोध शांत हुआ और बोले की तुम तुलसी नामक पवित्र और औषधीय पौधे के रूप में हर घर में पूजनीय रहोगी और तभी उस रूप में तुम्हारा विवाह विष्णु जी के अवतार से होगा। आज भी माना जाता है कि इस मंत्र से विवाह में आ रही बाधाएं दूर होती है। इसके बाद तुलसी गणेश जी के आशीर्वाद से फिर से तपस्या में लीन हो गयी और जब तक लीन रहना था तब तक कोई विवाह प्रस्ताव ना रख दे।

उधर शंखचूड़ अपनी तपस्या में लीन था जो देवताओं के लिए आने वाले तूफान का संकेत था। शंखचूड़ की तपस्या से ब्रह्मा देव प्रसन्न हुए और उसको दर्शन दिए। शंखचूड़ ने उनसे 3 वरदान देने को कहा, ब्रह्मा जी ने उसे 3 वरदान देने का वचन किया।

पहला वरदान - माँगा की उसके वरदान कोई और ना सुन सके व आप स्वंय भी (ब्रह्मा जी) किसी को ना बताये।

दूसरा वरदान - ऐसा कवच दे जिससे उसको कोई मार न सके, तो उसे कृष्ण कवच दिया तथा ब्रह्मा जी ने बोला कोई नहीं मार सकता परन्तु भोले शंकर यदि युद्ध करे तो मृत्यु जरूर हो जाएगी।

तीसरा वरदान - तीसरे वरदान में उसने अमृत माँगा जो ब्रह्मा जी ने देने से मना कर दिया परन्तु शंखचूड़ अत्यधिक चतुर था उसने ब्रह्माजी को बोला की आपने वचन दिया है 3 वरदान देने का तो आप अपना वचन निभाये, तब ब्रह्मा जी ने

कहा कि जब तक तुम्हारी अर्धांगिनी पतिव्रता धर्म का पालन करे तब तक तुम्हारी मृत्यु नहीं हो सकती यही अमरत्व वरदान है। वरदान पाने के बाद शंखचूड़ ने अपने लिए अर्धांगिनी खोजना चाहा जिसके लिये उसने भगवान गणेश की आराधना करी और उनके सुयोग्य कन्या खोजने में सहायता माँगी। गणेश जी ने शंखचूड़ को तुलसी तक जाने का मार्ग दिखाया। शंखचूड़ ने तुलसी को देखा तो उसे ऐसा लगा जैसे उनका रिश्ता जन्म जन्मांतर का नाता है। उसने तुलसी को विवाह प्रस्ताव दिया और तुलसी ने अपनी तपस्या पूरी करी। दोनों ने गंधर्व विवाह किया और अपने असुर लोक को गए। विवाह के बाद तुलसी सदा पतिव्रता रही और अपने पति की सेवा किया करती थी। जो कि शंखचूड़ के लिए कवच के समान था।

इसके बाद शंखचूड ने देवलोक पर आक्रमण किया उसके पास कृष्ण कवच था तो भगवान विष्णु उसको मार नहीं सकते थे, इसलिए देवता भोलेनाथ के पास गए और रक्षा की विनती करने लगे। युद्ध पर जाते हुए तुलसी ने अपने पति शंखचूड़ से कहा कि **"स्वामी आप युद्ध पर जा रहे और जब तक आप जीत हासिल कर वापस नहीं आ जाते तब तक मै आपके लिए पूजा (अनुष्ठान) करती रहूंगी और आपकी जीत का संकल्प नहीं छोड़ूंगी"।**

जब शिव गण भी उससे जीत ना पाए तो गणेश ने युक्ति निकली और शंखचूड़ से उसके दूसरे कवच के बारे में पूछा। बातों ही बातों में शंखचूड़ ने तुलसी के बारे में बता दिया तब गणेश जी विष्णु लोक गए और विष्णु जी को इसका हल निकलने के लिए प्रार्थना करी। भगवान विष्णु बड़े ही असमंजस की स्थिति में थे, वे सोच रहे थे कि तुलसी को कैसे रोका जाए क्योंकि तुलसी मेरी परम भक्त है और में उसके साथ छल नहीं कर सकता। तब गणेश जी ने कहा- परन्तु तुलसी के संकल्प को छल के सिवा भंग नहीं कर सकते है।

इस व्रत संकल्प को तोड़ने के लिए भगवान ने शंखचूड़ का रूप धारण किया और तुलसी के महल में पहुंच गये। तुलसी ने जैसे ही अपने पति शंखचूड़ को देखा तो वह तुरंत पूजा से उठ गई और उनके चरण छूने लगी। पूजा से उठते ही तुलसी का संकल्प टूट गया, जिससे शंखचूड़ की शक्तियाँ क्षीण हो गयी और शिव जी ने शंखचूड़ का सिर धड से अलग करके उसे मार दिया।

तुलसी को इसका आभास हो गया और रोने लगी, फिर पूछा कि ये जो मेरे सामने खड़े है, आप कौन है? उसने पूछा- आप कौन हो जिसको मैंने स्पर्श किया है, तब भगवान अपने सही रूप में आ गये पर वे कुछ ना बोल सके, तब तुलसी सारी बात समझ गई कि उसके साथ उसके पूजनीय भगवान विष्णु ने छल किया है, छल से उसके पति के प्राण हरे गए है। तब भगवान विष्णु जी ने उनको सारा स्मरण कराया कि कैसे सुदामा और तुलसी को राधा-रानी से श्राप मिला था, तो शंखचूड़ यानी की सुदामा को १ श्राप से मुक्ति मिल गयी और दूसरे श्राप को पूरा करने के लिए (कृष्ण अवतार में दरिद्र ब्राह्मण का श्राप) गौ लोक में रहना है।

तुलसी की सच्ची प्रेम भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उसे सदा अपने साथ पूजे जाने का आशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही **तुलसी के पौधे को सब घर-आँगन में पूजनीय माना जाये और अपने शालिग्राम अवतार से तुलसी से विवाह किया।**

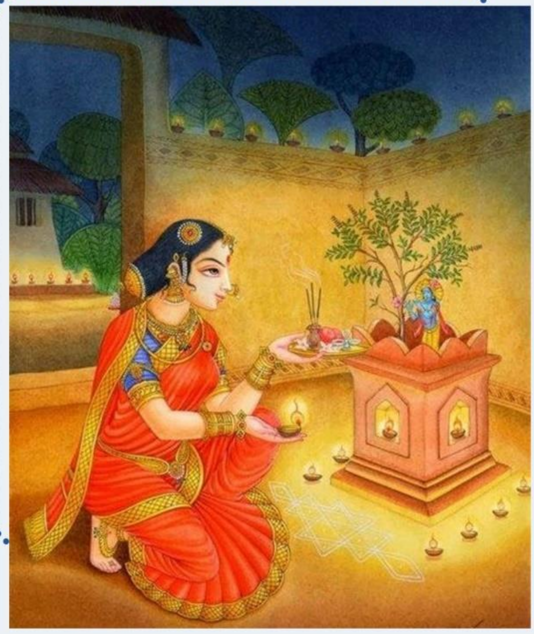

सबसे पहले शिव लोक पर तुलसी और शालिग्राम का विवाह माता पार्वती और भगवान शिव ने किया था तब से कार्तिक मास में देवउठनी एकादशी के दिन तुलसी विवाह की परंपरा है।

हिन्दू धर्म में सभी अपने दरवाजे या आंगन में तुलसी का पौधा लगाते है जो की अत्यंत शुभ माना जाता है और यह शरीर के कई विकारों के लिए भी फायदेमंद है। किसी भी शुभ कार्य में तुलसी के पत्ते को शामिल किया जाता है। चरणामृत के साथ तुलसी को मिलाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है।

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर 7303021123 को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

देव दिवाली

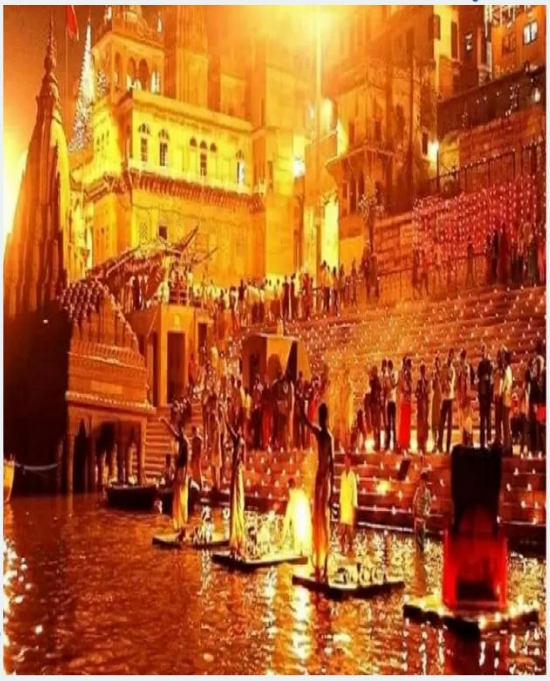

देव दिवाली का त्योहार कार्तिक पूर्णिमा पर भारत वर्ष में उत्तर प्रदेश के वाराणसी (काशी और बनारस पुराने नाम) में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह विश्व के सबसे प्राचीन शहर काशी की संस्कृति एवं परम्परा की अनूठी मिसाल है। यह त्योहार दीपावली के पंद्रह दिन बाद आता है। माना जाता है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन देवतागण दिवाली मनाने इस दिन काशी आते है। इसलिए पूरी काशी को रौशनी से सजाया जाता है। बनारस में गंगा नदी के घाटों को दीपों से जगमगाया जाता है।

इस दिन माँ गंगा और शिव जी की आराधना की जाती है। पौराणिक मान्यता के अनुसार तारकासुर दैत्य के 3 पुत्र थे - **तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली इन तीनों को त्रिपुरा कहा जाता था।** शिव-पार्वती के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था (क्योंकि तारकासुर को ब्रह्मा जी ने वरदान दिया था कि शिव के अंश से ही उसकी मृत्यु हो)। तारकासुर के वध का बदला लेने के लिए उसके तीनों पुत्रों ने तपस्या करके ब्रह्मा जी से अमर होने का वरदान मांगा। लेकिन ब्रह्मा जी ने उन्हें यह वरदान देने से मना कर दिया और कहा कि तुम उसकी जगह कुछ और वरदान मांग लो। इसके बाद तारकासुर के पुत्रों ने कहा कि वह चाहते हैं कि उनके नाम के अलग-अलग दिशाओं में नगर बनवाए जाएं और साथ ही उन्होंने वरदान में मांगा कि उनकी मृत्यु तभी हो सकती है जब अभिजीत नक्षत्र में कोई शांत पुरुष, असंभव रथ और असंभव अस्त्र से तीनों भाईयों को एक ही दिशा में एक ही वार से नष्ट कर सके। ऐसा वरदान ब्रह्मा जी ने उन्हें तथास्तु कह कर दे दिया।

इस वरदान के बाद तारकासुर के तीनों पुत्रों ने अपने बाहुबल से तीनों लोकों में अपना राज्य स्थापित कर लिया और सब जगह हाहाकार मचा दिया उनके अत्याचार से देवतागण महादेव शिव के समक्ष तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली (त्रिपुरासुर) राक्षसो से मुक्ति पाने के लिए विनती करने लगे। तब भगवान भोलेनाथ ने विश्वकर्मा से एक दिव्य रथ का निर्माण करवाया जिसके पहिये सूर्य और चन्द्रमा बने। उस दिव्य रथ पर सवार होकर भगवान शिव दैत्यों का वध करने निकले, देव और राक्षसों के बीच युद्ध छिड़ गया और जब युद्ध के दौरान तीनों दैत्य यानी त्रिपुरा एक साथ एक ही दिशा में आए तो भगवान शिव शंकर ने एक तीर से ही तीनों का वध कर दिया।

भगवान शिव ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन उन राक्षसों का वध कर उनके अत्याचारों से सभी को मुक्त कराया और तभी से **भगवान शिव को "त्रिपुरारी" व "त्रिपुरांतक" भी कहा जाने लगा।** इससे विजय दिवस की ख़ुशी में देवताओं ने स्वर्ग लोक में दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया था तभी से कार्तिक पूर्णिमा को देव दिवाली मनायी जाने लगी। माना जाता है कि आज भी इस दिन भगवान शिव धरती पर आते हैं।

काशी में देव दिवाली उत्सव मनाये जाने के सम्बन्ध में मान्यता है कि राजा दिवोदास ने अपने राज्य काशी में देवताओं के प्रवेश को प्रतिबन्धित कर दिया था, कार्तिक पूर्णिमा के दिन रूप बदल कर भगवान शिव काशी के पंचगंगा घाट पर आकर गंगा स्नान कर ध्यान किया, यह बात जब राजा दिवोदास को पता चला तो उन्होंने देवताओं के प्रवेश प्रतिबंध को समाप्त कर दिया। इस दिन सभी देवताओं ने काशी में प्रवेश कर दीप जलाकर दीपावली मनाई थी। देव दिवाली एक दिव्य और अद्भुत त्योहार है। इस दिन प्रबुद्ध मिट्टी के लाखों दीपक गंगा नदी के पवित्र जल पर तैरते है। एक समान संख्या के साथ विभिन्न घाटों और आसपास की इमारतों की सीढ़ियों पर सूर्यास्त के समय दीये प्रज्वलित किये जाते है। इस अवसर पर यह अद्भुत नजारा होता है और उसमें एक अलग ही धार्मिक उत्साह देखने को मिलता है। देव दिवाली का आयोजन सबसे पहले बनारस के पंचगंगा घाट पर सन्न 1915 में हजारों की संख्या में दिये जलाकर की गई थी। नारायण गुरु नाम के एक सामाजिक कार्यकर्ता ने युवाओं की टोली बनाकर कुछ घाटों से इसकी शुरुआत की थी, इसके बाद धीरे-धीरे इस पर्व की लोकप्रियता बढ़ने लगी।

देव दिवाली पूजा विधि -

- देव दिवाली के दिन सूर्योदय से पहले गंगा स्नान करें करना चाहिए। गंगा में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। अगर गंगा स्नान संभव न हो तो घर पर ही नहाने के पानी में थोड़ा गंगाजल मिलाकर स्नान कर लें।

- शाम के समय भगवान गणेश, शिव शंकर और विष्णु जी की विधिवत पूजा करनी चाहिए। उन्हें फूल, घी, नैवेद्य और बेलपत्र अर्पित करें।

- इसके बाद प्रभु शिव के मंत्र **"ॐ नमः शिवाय"** का जाप करना चाहिए और महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें- **"ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् | उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।"**

- इसके बाद भगवान विष्णु को पीले फूल, नैवेद्य, पीले वस्त्र और पीली मिठाई अर्पित करें। मान्यताओं के अनुसार इसी दिन भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार लिया था।

- अब इन मंत्रों का जाप करें- **"ॐ नमो नारायण नमः नमो स्तवन अनंताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे। सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः।।"**

- इन मंत्रों के जाप के बाद भगवान गणेश, शिव और विष्णु की आरती करें।

- गंगा घाट जाकर दीपक जलाएं। अगर गंगा घाट जाना संभव न हो तो घर के अंदर और बाहर दीपक जलाएं।

- तुलसी जी के पास दीपक जलाएं।

बचपन- बाल दिवस

पागलपन से भरा,
मासूमियत से सजा,
इठलाता, इतराता,
परेशानियों से परे होता है बचपन।

थोड़ा थोड़ा समझदार
तो थोड़ा हठी भी होता है बचपन
सपनों के जहाँ में घूमने वाला
हक़ीक़त में कहाँ ठहरता है बचपन,
दोस्तों से घिरा,
अपने ही दुनिया में मदमस्त होता है बचपन॥

पर सभी बालकों का इतना सहज
कहाँ होता है बचपन।
ज़िम्मेदारियों से घिरा
चिंताओं से भरा
मजबूरी से मज़दूरी में पड़ा
दूसरों के ताने सुनने में
निकल जाता है बचपन॥

किताबों की दुनिया से कोसो दूर
हक़ीक़त से डरा हुआ होता है बचपन
भोली सी मुस्कुराहट की खिलखिलाती हँसी,
ये सारी सपनों की बातें,
काली अँधेरी रात से ज़्यादा
दिन के उजाले से घबराता हुआ बचपन॥

हम भी तो यह भूल जाते हैं कि गरीबों का भी होता है बचपन॥

॥ सभी बच्चों को बाल दिवस की शुभकामनाएँ॥

- योगिता सदानी जी, पूणे (महाराष्ट्र)

इंसान अपनी आदतों
का गुलाम होता है
अगर आदतें एक बार
अच्छी हो जाए तो
जीवन में कुछ अच्छा होने
की संभावना बढ़ जाती है..!

सूर्यास्त होने तक
मत रुको
चीजे तुम्हें त्यागने लगे,
उससे पहले तुम्ही
उन्हें त्याग दो ..!!

ज्यादा उम्मीद मत करना
किसी से क्योंकि
जिससे जितना ज्यादा
लगाव होता है वही
सबसे गहरा घाव देता है..!!

रोटी से विचित्र
कुछ भी नहीं है
इंसान उसे पाने के लिए
भी दौडता है और
पचाने के लिए भी..!!

संघर्ष उस बीज से सीखिए
जो दफन होकर
तब तक लडता है
जब तक कि धरती को चीर
कर अपने अस्तित्व को
साबित नही कर देता है.!!

इज्जत हमेशा इज्जतदार
लोग ही करते है,
जिनके पास खुद इज्जत
नहीं है वो किसी दूसरे
को क्या इज्जत देंगे..!!

बच्चों को लौटा दो बचपन

**"यह दौलत भी ले लो यह शोहरत भी ले लो
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन
वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी“**

जगजीत जी की इस गजल से शानदार बचपन के वो सुखद पल आँखों के समक्ष उभर आते है और मन बरबस ही यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है वर्तमान दौर के बच्चों का बचपन न जाने कहाँ खो गया ....?

अधिकांश अभिभावकों ने आज बच्चों का बचपन अपनी अभिलाषाओं के तहत रौंद दिया है साथ ही इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का भी इसमें पूरा योगदान है। परिवर्तन संसार का नियम है किंतु परिवर्तन हमें किस दिशा की ओर ले जा रहा है प्रगति की जगह कहीं पतन तो नहीं हो रहा। इतना समझना तो जरूरी है।

बच्चे तो माटी के घड़ों से है उन्हें सही रूप में ढ़ालने का दायित्व अभिभावकों का है। आज व्यस्त जीवनशैली के चलते अभिभावकों के पास समय का अभाव पाया जाता है भौतिक संसाधनों की पूर्ति कर वे अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझते हैं जो पूर्णतः अनुचित है। अभिभावक की उपाधि अपने साथ अनेक चुनौतीपूर्ण दायित्वों से हमे जोड़ देती है। अभिभावक बनने से पूर्व ही दायित्वों का निर्वहन भली भांति करने की मानसिकता बना लेनी चाहिए।

बच्चे जो देखते है वहीं सीखते है उसी से उनका आचरण निर्धारित होता है। आजकल हम देखते है दूध मुँहे बच्चे भी हाथों में मोबाइल ले खुश हो खेलने लगते है। आजकल छोटे छोटे बच्चों की टोलियां मैदानों में नजर नहीं आती अपितु भारी भरकम फीस देकर स्पोर्ट्स क्लबों में भेजने से अभिभावकों को संतुष्टि मिलती है। साथ ही यह उनकी शानोशौकत का प्रतिक भी हो गया है। एकतरफ हम बच्चों को चीजे बांटना सिखाते है तो दूसरी तरफ उन्हें अपने से कमतर समुदाय के लोगों से दूरी बनाए रखने हेतु सावधान भी करते है उनके भीतर ऊंच-नीच, अमीरी गरीबी की लक्ष्मण रेखा हम ही खींचते हैं। भविष्य में यह छोटी छोटी बातें उनके व्यक्तित्व के विकास में किस तरह से बाधा निर्माण करती है यह हम समझ नहीं पाते बच्चों को खुलकर उनके बचपन का लुत्फ उठाने दें।

सावन तो अब भी आता है किंतु अब ना कागज की कश्तियां नजर आती है न ही बारिश में भीगते हुए बच्चों का बचपन नजर आता है, न ही रेत के घरौंदे बनते है, न ही गुल्ली डंडा दिखता है, तितलियों के पीछे भागना उन्हें पकड़ना, पंछियों के घोंसलों को निहारना, पेड़ों से तोड़ फल खाना, छत पर लंबी कतारों में आसमान की खूबसूरती को निहारते हुए शीतल हवा में बेफिक्री की चादर ओढ़े गहरी नींद सोना सब कुछ जैसे खत्म हो गया है।

दो ढाई साल में ही बच्चों को प्ले स्कूल में भेज देते है, छः सात साल के बच्चों का जीवन तो पूरी तरह मशिनी हो जाता है। वह स्वच्छंद प्यारा बचपन गुम सा गया है। संयुक्त परिवारों में पहले बच्चे दादा दादी, नाना नानी से बोधात्मक, शुरवीरों की कहानियां सुनते थे जो उनके जीवन में संजीवनी का काम करती थी। अब एकल परिवार हो रहे है अपनी सुविधा के खातिर माता पिता बच्चों को इलेक्ट्रॉनिक खिलौने, मोबाइल, लॅपटॉप आदि दे देते है और जिस वजह से चारदीवारीयों में उनकी दुनिया सिमट गई है। मोबाइल, कम्प्यूटर में वो न जाने क्या क्या देखते है और समय से पूर्व ही उनमें परिपक्वता आ जाती है जो विकृत समाज को जन्म दे रही है और फिर यहीं समाज देश के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। एक घंटे का संस्कार वर्ग लगाने से संस्कारों का आना संभव नहीं होता **संस्कारों की वास्तविक पाठशाला तो हमारा घर है।**

बच्चों के जिज्ञासु मन को पढ़ना होगा उन्हें समय देना होगा उनकी भावनाओं को समझते हुए लक्ष्य निर्धारित करें। उनके शारीरिक और मानसिक विकास को सुदृढ़ करने में केवल एजुकेशनल गेम्स नहीं मैदानों की खुली हवा भी बहुत जरूरी है तभी तो वह सही ढ़ंग से पनप पायेंगे।

बच्चों के मन की पीड़ा को समझे और उन्हें अवसर दे अपनी प्रतिभा को निखारने का, उड़ने दे खुले आसमान में, पंछी वहीं अधिक विकसित होता है जो बंद पिंजरे में नहीं खुले गगन में विचरण करता है। हमारे आज के नन्हें मुन्नों के हाथों कल देश का भविष्य होगा इसलिए हमें बहुमुखी प्रतिभा को तैयार करना है केवल भारी भरकम बस्ते और अपनी अभिलाषाओं के तहत हमें बच्चों के बचपन को खत्म नहीं करना है उन्हें बचपन के सुखद पलों को खुलकर जी लेने दो, लौटा दो उन्हें उनका सुनहरा बचपन।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

लघुकथा-परीक्षा ड्यूटी

बड़ी ही सजकता से बोर्ड परीक्षा में कक्ष निरीक्षक की ड्यूटी कर रहा था। मैंने पहले ही मन मे ठान लिया था कि आज किसी को भी हिलने का मौका नहीं दूंगा।

पेपर बंटने से पहले कक्षा में चिल्लपों मचा हुआ था। जैसे ही पेपर दिया कक्षा में शांति सी छा गई मानो कक्षा में मेरे और अन्य कक्ष निरीक्षक के अलावा कोई मौजूद न हो। वैसे तो कक्ष निरीक्षक की ड्यूटी से मैं बचता आ रहा था परंतु इस बार ऑनलाइन ड्यूटी लगने और न जाने पर वेतन रोके जाने की बात सुनी तो मैंने तुरंत जाने के लिए हाँ कर लिया।

एक घंटा बीत गया और कक्षा में सन्नाटा पसरा हुआ था। मैंने पहले ही इतना हड़का जो दिया था। लड़के भी बड़ी तन्मयता से पेपर हल कर रहे थे।

अंतिम घंटे में कुछ सुगबुगाहट शुरू हो गई। अब मैं भी ज्यादा सतर्क हो गया था। मुझे अब यह ड्यूटी किसी युद्ध से कम नहीं लग रही थी। दीवार पर लगे कैमरे मेरे और लड़कों की एक एक गतिविधि को रिकॉर्ड कर रहे थे। अब बार बार हड़काने के बाद भी खुसुर फुसुर बंद नहीं हो रही थी ।

अंत मे मैंने कड़क आवाज में कहा **"देखिए जिले से यह सूचना आई है कि इस कमरे में बहुत खुसुर फुसुर हो रही है। अगर यह बंद नहीं हुआ तो पूरा कमरा नकल में पकड़ा जाएगा।"**

अँधेरे में फेंका तीर काम कर गया। पुनः सन्नाटा पसर गया। तभी एक लड़का जेब से कुछ निकालता और मुझे देखकर पुनः जेब में रख लेता। मैं समझ गया निश्चित ही नकल की पर्ची होगी। मैं सजग हो गया और मन में निश्चय किया कि आज तो इस लड़के को रंगे हाथ पकड़ूँगा।

15 मिनट की बेल बज चुकी थी सभी लड़के लिखने में लगे हुए थे। उस लड़के ने मेरी नजर बचाकर कुछ निकाल कर कॉपी में रख लिया। झट से मैं उसके पास जा धमका। लड़के की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। हाथ जोड़ने लगा। अब मैं निश्चिन्त हो गया था कि नकल का पर्चा ही है उसके पास। मैंने तुरंत कॉपी अपने कब्ज़े में लेकर छानबीन शुरू की तो मैंने पाया कि पाँच सौ का नोट कॉपी में लगा हुआ था।

मैं माजरा समझ चुका था। मैंने कहा **"अगर तुम समझते हो कि रुपए रखने से नम्बर बढ़ जाएंगे तो यह तुम्हारी भूल है। तुम्हें अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं है क्या? यह तो एक छोटी सी परीक्षा है आगे कई परीक्षाएं देनी पड़ेगी और कहाँ कहाँ रुपये रखोगे? अपनी योग्यता पर भरोसा रखो। सफलता तुम्हारे क़दम जरूर चूमेंगी।"**

तुरंत उस लड़के ने माफी मांगी और पाँच सौ का नोट कॉपी से निकालकर जेब में रख लिया। इस घटना को लगभग आठ-दस वर्ष व्यतीत हो गए और मैं इस घटना को भूल भी गया था।

इतने सालों के बाद स्कूल के दो कमरों की दीवारें चटक गईं थी और छत भी बारिश में टपकने लगती थी जिससे बच्चों को खतरा रहता था। इसी कारण मैं बच्चों को स्कूल के बरामदे में बैठाकर पढ़ाया करता था। कई बार विभाग में शिकायत करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे स्कूल में एक सरकारी इंजीनियर छत और दीवारों की जांच करने आ रहे हैं और उसकी रिपोर्ट के बाद ही स्कूल की मरम्मत के खर्च का ब्यौरा दिया जायेगा और इसके बाद ही उन पैसो से स्कूल की मरम्मत हो पाएगी।

मैं उनके आने का बेसब्री से इंतजार करने लगा कि एक दिन विभाग से खबर आई कि कल इंजिनियर साहब मेरे स्कूल में आयेगें फिर क्या मैं अगले दिन की तैयारी में जुट गया।

मैंने उनके स्वागत और नाश्ते पानी का पूरा इंतजाम कर लिया था और मैं जैसे ही वंदना के बाद बच्चों को पढ़ाने के लिये जा ही रहा था कि एक बड़ी कार विद्यालय में आकर रुकी। मैं समझ गया था कि इंजीनियर साहब ही होंगें। बड़े आदर सत्कार से उनको कुर्सी पर बैठने के लिये कहा पर यह क्या वे तो मेरे चरणों मे गिर गये और बोले **"आप गुरु है आप पहले बैठिए।"** आप ने मुझे पहचाना नहीं? मैं वो ही हूँ जिससे आप ने पांच सौ का नोट परीक्षा कॉपी में रखने से रोक दिया था और कहा था कि पैसे कहाँ कहाँ रखोगे अगर तुम्हारे पास काबिलियत है तो पैसे रखने की क्या जरूरत है? और फिर कभी मैंने पैसे नहीं रखे तभी तो मैं इस ओहदे पर पहुँचा हूँ।

मेरा हृदय गदगद हो गया और मैंने उसे हृदय से लगा लिया और सही रिपोर्ट लगने के बाद स्कूल के कायाकल्प का कार्य भी जोड़ो शोरों से शुरू हो गया।

- डॉ० कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव जी, रावगंज, जिला जालौन (उत्तर प्रदेश)

हंसी–खुशी के पल

टीचर - भैंस पूंछ क्यों
हिलाती है?

छात्र - क्योंकि पूंछ में इतनी
ताकत नहीं होती कि
भैंस को हिला सके ..!!

पप्पू ने जॉब के पहले दिन
कंप्यूटर पर बारह घंटे गुजारे,
बॉस - खुशी से बोले, गुड
आज क्या काम किया?
पप्पू - सर वो KEYBOARD
की ABCD आगे पीछे लगी थी
वही सही कर रहा था...
हीं..हीं...हीं...हीं

मरीज - डॉक्टर साहब कडवी
दवाई मत लिखना...

डॉक्टर - तो क्या घेवर लिखके
दे दूं..????

बच्चो के हाथ से
मोबाइल छीनने का
मतलब किसी ICU के
मरीज के मुँह से
आक्सीजन मास्क हटाने
के समान है..!!!

दोस्त - तेरा इतिहास का
पेपर कैसा हुआ???
बबलू - बहुत बुरा...
उन्होने मेरे जन्म के भी
पहले के प्रश्न पूछे...!!

किसी ने मुझसे पूछा - तुम
ग्रुप में इतने मैसेज क्यों
करते हो??
मैंने मुस्कराकर बोला कि
इन लोगों का है ही
कौन मेरे सिवा...!!

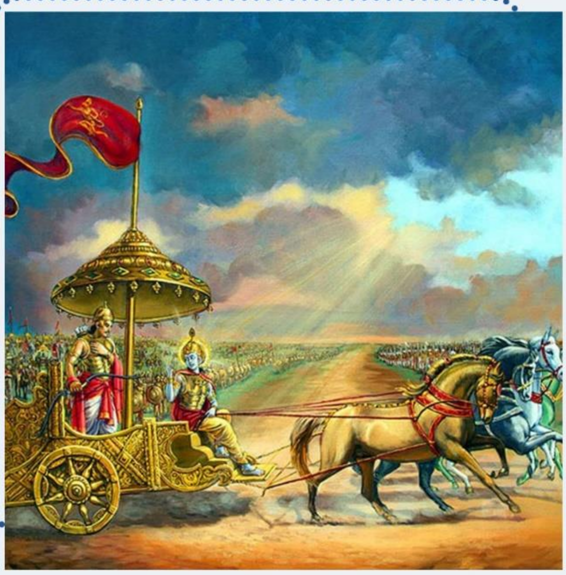

सनातन धर्म प्रश्नोत्तरी- महाभारत

39. एकचक्रा नगरी में रहते हुए भीम ने किस राक्षस को मारा...?
- लाक्षाभवन से बचकर पांडव साधुवेश में एकचक्रा नगरी में रहने लगे। वहां पर राक्षस, बकासुर का आतंक था। प्रत्येक परिवार को क्रमानुसार, अपने एक सदस्य को बकासुर के पास भोजन के रूप में भेजना होता था। पाण्डवों के आश्रयदाता, ब्राह्मण परिवार का क्रम आने पर भीम, परिवार के सदस्य के रूप में राक्षस के पास गये और बकासुर को मारकर नगर को राक्षस के आतंक से मुक्त करवाया।

40. धृष्टद्युम्न कौन था...?
- धृष्टद्युम्न राजा द्रुपद का पुत्र था। द्रोणाचार्य से पराजित होने के बाद द्रुपद ने द्रोणाचार्य से अपने अपमान का बदला लेने के लिए वीरपुत्र की कामना से यज्ञ करवाया। याज ब्राह्मण द्वारा सम्पन्न यज्ञकुंड से शस्त्रसहित धृष्टद्युम्न प्रकट हुए। महाभारत युद्ध में पाण्डव सेना के सेनापति धृष्टद्युम्न थे, और धृष्टद्युम्न ने ही द्रोणाचार्य का वध किया था।

41. द्रोपदी का जन्म कैसे हुआ...?
- धृष्टद्युम्न के साथ ही यज्ञकुंड से द्रोपदी का जन्म हुआ।

42. द्रोपदी को द्रोपदी के अलावा किन-किन नामो से भी जाना जाता है...?
- पांचालराज की राजकुमारी होने के नाते द्रोपदी का एक नाम **पांचाली** भी था। द्रोपदी का वर्ण कृष्ण था इसलिये उसका एक नाम **कृष्णा** भी था। अज्ञातवास में द्रोपदी विराटनगर में दासी **"सैरंध्री"** बनकर रही। यज्ञवेदी से उत्पन्न होने के कारण उसे **"वेदिजा व याज्ञसेनी"** नाम से भी पुकारा जाता है। दु:शासान द्वारा अपनी वेणी को छू लेने के कारण द्रोपदी ने दु:शासन का वध होने तक अपनी वेणी को न करने की प्रतिज्ञा ली, इस कारण द्रोपदी का एक नाम **"मुक्तवेणी"** भी है।

43. धृष्टद्युम्न को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा किसने दी...?
- आचार्य द्रोण ने। आचार्य जानते थे कि प्रारब्धानुसार जो कुछ होना है, वह होकर ही रहेगा अत: भविष्य के अनिष्ट को नजरअंदाज करते हुए अपनी कीर्ति के अनुसार अपने शत्रु को भी शिक्षा प्रदान की।

44. पाण्डवों के पुरोहित कौन थे...?
- स्वयंवर के लिए पांचालनगर जाने से पहले, उत्कोचक तीर्थ में आश्रम बनाकर तपस्यारत रहने वाले धौम्य मुनि को पाण्डवों ने अपना पुरोहित बनाया।

45. द्रोपदी के स्वयंवर की क्या शर्त थी...?

- लक्ष्य के पास विशेष धनुष रखा गया था जिस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर ऊपर में घुमते हुए पहिये में से, उसके ऊपर रखे लक्ष्य को नीचे की ऑर परछाई में देखते हुए अधिकतम पांच बाणों में लक्ष्य को वेधना था।

46. अर्जुन के अलावा और कौन धनुष पर डोरी चढ़ाने में सफल रहा...?
- कर्ण !! अर्जुन से पहले कर्ण ने प्रत्यंचा चढ़ा ली थी पर द्रोपदी के द्वारा उसे वरण करने से मना करने पर कर्ण ने लक्ष्य को नहीं साधा।

47. क्या अर्जुन स्वयंवर में क्षत्रिय राजकुमार के रुप में शामिल हुई...?
- नहीं, राज्यहीन पाण्डव उस समय ब्राह्मण वेश में जीवन यापन कर रहे थे। ब्राह्मण के रूप में अर्जुन द्वारा लक्ष्य भेद देने पर अपनी अफसलता से कुंठित, मण्डप में उपस्थित राजाओं ने अर्जुन व भीम पर आक्रमण कर दिया जिसे उन्होंने अपने शस्त्र कौशल से विफल कर दिया।

48. द्रोपदी पांच पाण्डवों की पत्नी कैसे बनी...?
- द्रोपदी को लेकर माता कुन्ती के पास पहुंच कर हमेशा की तरह जब अर्जुन व भीम ने कहा कि देखो मां आज हम भिक्षा में क्या लाये है तो हमेशा की तरह, माता ने भी बिन देखे कह दिया कि हमेशा की तरह पांचों अपास में बांट लो। चूंकि कुन्ती ने कभी झूठ नहीं बोला था अतः माता के वचन की मर्यादा रखने के लिए द्रोपदी की शादि पांचों पाण्डवों के साथ हुई।

49. द्रोपदी की पूर्वजन्म की कथा क्या है...?
- पूर्व जन्म में ऋषि कन्या के रूप में उसने भगवान शंकर की तपस्या की। भगवान शंकर द्वारा सर्वगुण सम्पन्न पति का वर देने के बावजूद भी उसने अज्ञानतावश एक के बाद एक पांच बार सर्वगुण पति का वर मांगा। इस वर के फलस्वरूप ही द्रोपदी, पांच पतियों की पत्नी बनी थी।

50. राज द्रुपद ने पाण्डवों को कैसे पहचाना...?
- स्वयंवर में विजेता के स्वागत के लिये द्रुपद ने एक कक्ष में कृषि यन्त्र, एक कक्ष में वस्त्र एवं आभुषण, एक कक्ष में पशु सामग्री फल-फूल और एक कक्ष में विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्र सजाये। पाण्डव, किसी अन्य कक्ष में रूचि न दिखाते हुए सीधे आयुद्ध कक्ष में पहुंचे तो राजा द्रुपद को विश्वास हो गया कि ये बलिष्ठ व रूपवान कुमार पाण्डव पुत्र ही है।

51. द्रुपद, द्रोपदी का विवाह पांचों पाण्डवों के साथ करने को कैसे सहमत हुए...?
- कुन्ती के वचन व पाण्डवों के निर्णय से द्रुपद व धृष्टद्युम्न चिंतित हुए और असमंजस में पड़ गये थे। उसी समय वेदव्यास ने आकर राजा द्रुपद को द्रोपदी के पूर्व जन्मों की कथा बतलायी व प्रारब्ध की गति को समझाया। वेद व्यास के वचनों को सुनकर द्रुपद सहमत हुए।

(क्रमशः........, अगले माह.)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

पारंपरिक व्यंजन-
गेहूं के छिलको का ढोकला

सामग्री - 2 कटोरी गेहूं का छिलका, 1 टेबल स्पून मोठ की दाल, 1 टेबल स्पून गेहूं का आटा, 1 टेबल स्पून लाल मिर्ची, एक टेबल स्पून घी, कटा हुआ हरा धनिया, हल्दी पाउडर, पानी आवश्यकतानुसार।

विधि - मोठ की दाल को 2 घंटे पहले भिगो कर रखें। एक परात में गेहूं के छिलके लेकर उसमें मोठ की दाल, गेहूं का आटा, नमक, हल्दी, लाल मिर्ची, धनिया और घी का मोयन डाल दे। फिर उसे गूँथ लें। बाद में इसको गोल जैसा आकार देकर बीच में से छेद करिए। फिर इसे ढोकला पात्र की जाली पर रखकर 15 मिनिट तक गैस पर पकने दें। इसे आप तुअर दाल के साथ या फिर अचार, चटनी के साथ भी परोस सकते हो।

रसोई युक्तियाँ -

१) शक्करपारे बनाते समय उबले हुए चावल के पानी से आटा गूंथने से शक्करपारे नरम और स्वादिष्ट बनते है।
२) कढी बनाते समय आधा चम्मच राई की दाल डालने से कढी खट्टी व स्वादिष्ट होती है।
३) दही बड़े के बडे नरम बनाने के लिए दाल में एक चम्मच दही और एक चुटकी बेकिंग पाउडर मिलाकर बनाए।
४) गरम मसाला पीसते समय दो चम्मच शक्कर मिलाने से मसाले का रंग अच्छा रहता है।

घरेलू नुस्खे -

ठंडी का मौसम सिंघाड़े का मौसम हैं। आये जाने इसका सेवन करने से क्या लाभ मिलते है ?
१) आपके गले में टॉन्सिल हो या खराश हो तो उससे निजात पाने के लिए आप सिंघाड़े का सेवन करिए, उससे आराम मिलेगा।
२) अगर आपको अनिद्रा की समस्या है तो आप नियमित रूप से सिंघाड़े का सेवन करिए।
३) आपको हाई ब्लड प्रेशर है तो आप सिंघाड़े खाये ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रहेगा।
४) अगर आप वजन घटाना चाहते हो तो सिंघाड़े का सेवन कीजिए इसमें फाइबर को पचने में थोड़ा समय लगता है इसलिए यह लंबे समय तक पेट भरा हुआ रखता है।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

गीता में कृष्ण वचन -

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम् धर्म संस्थापनार्थय संभवामि युगे युगे ।।

इस तरह होणकाल ब्रह्म से परमात्मा जब-2 जिस अवतार की जरूरत होती है तब स्वयं परमात्मा राम कृष्ण व संतों के रूप में आते है।

संत = नित्य अवतार के रूप में (आत्म कल्याण हेतु)
राम-कृष्ण = निमित अवतार के रूप में (शरीर रक्षा-राक्षस दमन हेतु)

फिर वापस सत्ता को चालू करते है। अब आज सत्ता चल रही है, लेकिन लोग नहीं समझ है। उनका कारण झूठे गुरु ही है। वेदों में ब्रह्मा जी ने यह बात पहले ही लिख दी कि तीन युगो तक खट दर्शणी मर्यादा में रहेंगे।

साख -

तीन जुग में रहत है, खट दरशण मत सार ।
चौथे में सुखराम कह भूले पद विचार ।।
बिरली जागा रहत है, निपट नाश न कोय ।
कलयुग में सुखराम कह पाखंड पूजा होय ।।

युगों का धर्म -

1. सतयुग - इस युग में सब सत्य पर चलते थे और अगर कोई बदमाशी करे तो पूरे राष्ट्र को दंड मिलता था, अतः बहुत तकलीफ थी। सतयुग की उम्र 17,28,000 (सत्रह लाख अठाइस हजार वर्ष) थी, जिसमे मनुष्य की आयु सतयुग में एक लाख वर्ष की होती थी।

2. त्रेतायुग - तपस्या करते कंद, मूल, फल खाते लेकिन आज फलों के मालिक हो गये। नियम भी बदला। एक व्यक्ति से गाँव में गलती तो उस गाँव को ही दंड। त्रेतायुग की उम्र 12,96,000 (बारह लाख छिनवे हजार वर्ष)थी, जिसमे मनुष्य की आयु त्रेतायुग में दस हजार वर्ष हो गयी।

3. द्वापुरयुग - यज्ञ, हवन, पूजा-पाठ, स्नान, तीर्थ, व्रत करते। इसका नियम भी बदला, एक परिवार तक दंड मिलेगा। द्वापरयुग की उम्र 8,64,000 (आठ लाख चौसठ हजार वर्ष) थी, जिसमे मनुष्य की आयु द्वापरयुग में एक हजार वर्ष हो गई।

4. कलयुग - **कलयुग झांजली मान है दिया धर्म सब छेद।**
नाम निकेवल ब्रह्म को रे, सदा उत्तम पद भेद ।।
कलयुग केवल नाम आधारा, समुरि-सुमरि नर उतरो पारा।

दूसरे धर्म इसमें निभते नहीं है। कलयुग में मक्खी, मच्छर हो गये। सामग्री भी शुद्ध नहीं। अतः जप, तप सत पर रहना, यज्ञ नहीं निभते है। दंड का नियम भी बदला। करसी सोई बेटा का बाप कलयुग की उम्र 4,32,000 है। मनुष्य की आयु कलयुग में सौ वर्ष हो गई। कलयुग में संत भी बहुत आये दादू जी, दरियाव जी संतदास जी, रामचरण जी, कबीर सा, नातव भुगतसी, साहब, पलटू साहब, अगरदास जी, वीरमदास जी आदि। इस तरह अलग-अलग सत समय आये और जीव मोक्ष में गये। इससे पहले 24 तीर्थंकर सतयुग से लेकर अब तक, 9 करोड़ जन इनके साथ में गये। इस तरह एक के बाद एक संत आते और वो जाते तो भक्ति बंद हो जाती। पंथ संप्रदायवादी बन गये और अपने ही पंथ की सराहना करते और केवल ज्ञान को छिपाने लग गये या उनको इस ज्ञान का महत्व ही नहीं ज्ञात हो।

साख - **पंथ संप्रदाय बणग्या घणा, अपनी ढपली अपना राग।**
राग द्वेष फैला रहया, लिया फिरे बैराग ।।
कई तरह के मत मतान्तर चालू हो गये। अपने-अपने गुरु में बंध गये।

पांचज्ञान- अलग-अलग भक्ति (ज्ञान)
1. मतज्ञान- अपने पंथ व अपना गुरु हम करते है जो सही और हम सब एक जगह पहुँच जायेंगे। हमारे पास पैसा है। अतः परमात्मा की कृपा है। हम मनुष्य है और मनुष्य ही बनेंगे। इस तरह अधिकांश जनता मतज्ञान में ही चल रही है।
2. श्रुतिज्ञान- शास्त्र विद्या पढ़ना व उस पर चलना और उसी से अपना कल्याण मानने लगे। कबीर साहब ने उनके लिए लिखा।

साख - **पोथी पढ़-पढ़ जग मुवा, पंडित हुवा न कोय।**
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।।

आज इस साख का अर्थ भी कोई नहीं जानता- प्रेम को ही ढाई अक्षर कहते है। राम नाम को संतों की विधि से रटोगे तो आधा करद शब्द नेः अक्षर प्रकट होता है। आत्मा उसका संग करती है। पिंड+अत = पंडित होता है नहीं तो पांडे जी। पिंड में आना पड़ेगा। अतः शास्त्र वाचन से भी मोक्ष नहीं और ज्ञानी इसी में भूल रहा है। चारों आंगडिया का ज्ञान (चौथे लोक) तो पिंडत सही।
3. **अवधज्ञान-** तीन लोक पूरा आगे-पीछे की बात तो बता देता है और भूत भविष्य वर्तमान की बातें बता देता है। इससे भी मोक्ष नहीं होता। लेकिन इस विद्या से लोगों को भ्रम में डालते है। कल्याण होता नहीं है मरने पर सिद्धाई भी खत्म हो जाती है।

संत शिष्य - जगदीश प्रसाद जागेटिया जी, ब्यावर (राजस्थान)

रामबोला से कविकुल गुरू कालिदास कैसे बने?

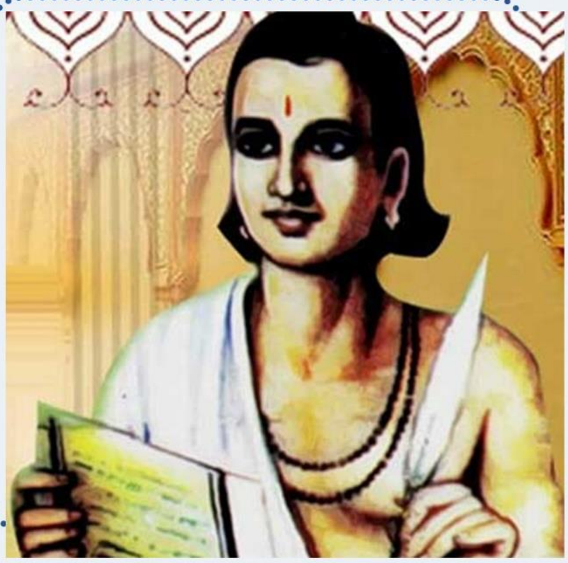

सभी प्रबुद्ध पाठकों के ध्याननार्थ बताना चाहता हूँ कि महाकवि कालिदास जी के जन्म व परिवार से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। परन्तु उनको मानने वाले अधिकांश में से कुछ कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तो कुछ द्वादशी तिथि को इनकी जयन्ती मनाते हैं इसी अनुरूप इस बार **मध्य प्रदेश सरकार में संस्कृति मंत्री सुश्री उषा ठाकुर के अनुसार देव प्रबोधिनि एकादशी से सात दिवसीय [4 नवंबर से 10 नवंबर] अखिल भारतीय कालिदास समारोह, कालिदास संस्कृत अकादमी और विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा कालिदास संस्कृत अकादमी के उज्जैन स्थित परिसर में आयोजित किया** जायेगा और इसके शुभारंभ समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को आमंत्रित किया जाएगा। अब सबसे पहले संक्षेप में आप सभी को एक रोचक तथ्य, **"रामबोला से कालिदास कैसे बने प्रस्तुत कर रहा हूँ।"** यहाँ यह ध्यान रखें कि कालिदासजी के सम्बन्ध अनेक किवंदतियां हैं और बहुत कम जानकारियां हैं। इसलिये कथाओं और किंवदंतियों के सहारे जो कुछ जानने मिलता है उस अनुसार उस समय के 'राजा शारदानन्द' की विदुषी राजकुमारी विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जो उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा, वे उसी के साथ शादी करे लेंगी। इसी क्रम में उसने अनेक पण्डितों को पराजित किया यहाँ तक कि काशी के अनेक प्रकांड विद्वानों तक को राजकुमारी विद्योत्तमा ने शास्त्रार्थ में हरा दिया था।

विदुषी राजकुमारी विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ में पराजित व अपमानित पण्डितों ने उससे बदला लेने के उदेश्य से एक ऐसे पात्र को खोज ही रहे थे कि उन्हें जंगल में एक जगह कालिदासजी पेड़ की डाल पर बैठे दिखायी दिये। आश्चर्य इस बात का था कि वे जिस टहनी पर बैठे थे उसी को बिना परिणाम जाने काट रहे थे, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि ये अनपढ़ और निपट मूर्ख थे बल्कि यों कहिये बुद्धि की दृष्टि से शून्य अर्थात उन्हें चीजों की समझ ही नहीं थी। इनके इस कृत्य ने उन सभी को आकर्षित किया। फलतः उन पराजित व अपमानित पण्डितों को अपने षड्यन्त्र रचने के लिए ये श्रेष्ठ पात्र लगे। इसलिये उन सभी पराजितों ने मिलकर छल से कालिदासजी से विदुषी वियोत्मा का मौन शब्दावली में शास्त्रार्थ करवा कर उनका विवाह राजकुमारी विद्योत्मा से करवा दिया। लेकिन इसके बाद जब वास्तविकता सामने आयी तब विदुषी राजकुमारी विद्योत्तमा ने इनको केवल धिक्कारा ही नहीं बल्कि यह कह कर घर से निकाल दिया कि सच्चे विद्वान् बने बिना घर वापिस नहीं आना। बताते हैं इसके बाद कालिदासजी तन मन से समर्पित हो अर्थात पूरी लगन तथा परिश्रम से, सच्चे मन से माँ काली देवी की आराधना की और उनके आशीर्वाद फलस्वरूप वे ज्ञानी भी बने और धनवान भी साथ ही साथ उस दिन के बाद से ही वे कालिदास के नाम से सर्वत्र जाने लगे। इस प्रकार उनके ज्ञान चक्षु खुल जाने से उन्होनें न केवल अनेक स्थानों का भ्रमण किया बल्कि वेद-शास्त्रों का

गहन अध्ययन करके विद्वत्ता प्राप्त की। विद्वत्ता प्राप्ति पश्चात, जब घर लौटे तो पत्नी ने संस्कृत में प्रश्न पूछा और उत्तर में उस प्रश्न में उपयोग किए गये शब्दों से प्रारंभ कर तीन - **महाकाव्य 'कुमार सम्भव', खण्डकाव्य 'मेघदूत' व महाकाव्य 'रघुवंश'** सृजित कर विदुषी पत्नी विद्योत्तमा को चमत्कृत कर दिया। चूँकि उन्हें अपनी पत्नी के धित्कारने के बाद परम ज्ञान की प्राप्ति हुई इसलिये, ऐसा माना जाता है कि कालिदासजी ने विदुषी विद्योत्तमा को पत्नी न मान अपना पथप्रदर्शक गुरु माना।

उपलब्ध जानकारी अनुसार इसके बाद इन्हें राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (चंद्रगुप्त द्वितीय) के शासनकाल में दरबार के नवरत्नों में शामिल किया गया था। कहीं कहीं ऐसा पढ़ने में आता है कि इन्होनें छोटी-बड़ी कुल लगभग चालीस रचनायें सृजित कीं हैं लेकिन निर्विवाद रूप से सात रचनायें तो कालिदासकृत ही मानी जाती हैं। जिसमे **तीन संस्कृत नाटक विक्रमार्वण्यम, मालविकाग्निमित्रम और अभिज्ञानशाकुंतलम के अलावा दो महाकाव्य कविताएँ रघुवंश और कुमारसंभव और दो ही खंडकाव्य ऋतुसंहारा एवं मेघदूत है।**

अन्त में आपके ध्यानार्थ बताना चाहता हूँ कि कविकुल गुरु कालिदासजी ने आदर्शवादी परंपरा के साथ साथ नैतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुये सरल, मधुर व अलंकार युक्त भाषा का प्रयोग करते हुये रचनायें सृजित कीं। इसके अलावा इनकी रचनाओं में न केवल श्रृंगार रस का विवरण बल्कि ऋतुओं का विस्तृत वर्णन पढ़ने मिलता है। यही सब कारण रहे हैं जिसके चलते इनके बाद हुए प्रसिद्ध कवि वाणभट्ट ने इन्हें प्रतिभावान, महाकवि और उच्च कोटि के नाटककार बता इनकी भूरी-भूरी प्रशंसा की। इसके अलावा एक और असाधारण तथ्य ध्यान में आया है जिसके अनुसार अपने समय के दक्षिण वाले शक्तिशाली चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय ने भी अपने एक शिलालेख में कालिदासजी को महान कवि के रूप में दर्शाया हुआ है। आज तक भी सभी प्रकाण्ड विद्वान कालिदासजी को सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय कवि मान काफी आदर देते हैं।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी कि इनका **अभिज्ञानशाकुंतलम पहला भारतीय नाटक था जिसे पश्चिमी भाषा में सर विलियम जोन्स ने अनुवादित किया था। इसी प्रकार पढ़ने में आता है कि क्षिप्रा नदी के तट पर बैठकर लिखा गया खंडकाव्य मेघदूत को होरेस हेमैन विल्सन ने अंग्रेजी में अनुवाद किया था।**

इन्हीं सब कारणों से इनकी गणना भारत के ही नहीं बल्कि संसार के अति सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों में है क्योंकि नाट्य, महाकाव्य, खँड़काव्य/गीतिकाव्य के क्षेत्र में इनकी अदभुत रचनाशक्ति अपने आप में बेजोड़ मानी जाती है।

इस तरह ऊपर वर्णित **महाविदुषि विद्योत्मा और कविकुल चूड़ामणि कालिदासजी** का जीवन दर्शन यह प्रेरणा देता है कि शिक्षा से न केवल विद्वता की प्राप्ति होती है बल्कि दरिद्रता दूर होकर जिन्दगी में खुशहाली आती है, साथ ही यश में भी वृद्धि होती है।

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, "राजा बाबू", बीकानेर (राजस्थान)

श्रीपंचमी – राम जनकी विवाह

भगवान श्री राम चेतना और माता सीता प्रकृति शक्ति की प्रतीक हैं। चेतना व प्रकृति का मिलन का योग असाधारण है। मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी को यह विशेष योग भगवान श्रीराम और माता सीता के विवाह उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे **"विवाह पंचमी"** कहते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार जब प्रभु श्री राम और माता सीता का विवाह हुआ था, उस समय श्रीराम की उम्र 13 वर्ष तथा माता सीता की उम्र 6 वर्ष थी।

पूरा पढने के लिए आइकन पर क्लिक करें WWW

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
हार्दिक
आभार
www.bhartiyaparampara.com